चुने हुए शेर

ज्ञानप्रकाश विवेक

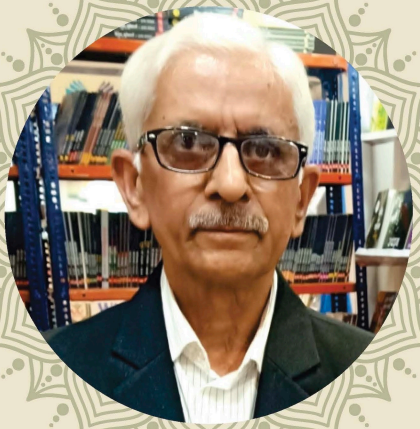

सम्पादन

हरेराम समीप

ज्ञानप्रकाश विवेक

जन्म : 30.01.1949 (बहादुर गढ़)

तेतीस वर्ष तक एक साधारण बीमा कम्पनी में नौकरी और सेवानिवृत्ति के बाद पूर्ण कालिक लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें : उपन्यास- 'गली नम्बर तेरह', 'दिल्ली दरवाज़ा', 'अस्तित्व', 'आखेट', 'चाय का दूसरा कप', 'तलघर', 'डरी हुई लड़की', 'नई दिल्ली एक्सप्रेस, विस्थापित' तथा 'व्हील चेयर'।

कहानी संग्रह : 'अलग-अलग दिखाएँ', 'जोसफ़ चला गया', 'शहर गवाह है', 'पिताजी चुप रहते हैं', 'इक्कीस कहानियाँ, 'शिकारगाह', 'सेवानगर कहाँ है', 'मुसाफ़िरख़ाना', 'बदली हई दुनिया', 'कालखण्ड' तथा 'मेरी पसंदीदा कहानियाँ'।

ग़ज़ल संग्रह : 'धूप के हस्ताक्षर', 'आँखों में आसमान', 'इस मुश्किल वक़्त में', 'गुफ़्तगू अवाम से है', 'घाट हज़ारों इस दरिया के', 'दरवाज़े पर दस्तक' तथा 'काग़जी छतरियाँ बनाता हूँ'।

कविता संग्रह : 'दरार से झाँकती रोशनी'।

आलोचना : 'हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा', 'हिन्दी ग़ज़ल दुष्यंत के बाद', 'हिन्दी ग़ज़ल की नई चेतना'।

उर्दू शायरी : 'रिवायत से जदीदियत का सफ़र'। (उर्दू शायरी)

फ़ेलोशिप : वर्ष 2014-2015 में संस्कृति मंत्रालय द्वारा हिन्दी ग़ज़ल पर सीनियर फेलोशिप।

फ़िल्म तथा लघु फिल्में : कैद कहानी पर जनमंच द्वारा फिल्म का निर्माण। शिमला दूरदर्शन द्वारा 'मोड़' तथा 'बेदखल' कहानियों पर लघु फिल्मों का निर्माण। क्लासिक कहानियों की श्रृंखला में, वाराणसी दूरदर्शन केंद्र द्वारा 'शिकारगाह' कहानी का फिल्मांकन। छोटी सी दुनिया, बूढ़ा, पापा तुम कहाँ हो, क्षमा करना माँ का नाट्य मंचन।

हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 2021 में - आजीवन साहित्य साधना सम्मान।

इन्दु शर्मा अन्तर्राष्ट्रीय कथा सम्मान (यूको) डरी हुई लड़की को वर्ष 2021 में।

सेवानगर कहाँ है कहानी को राजस्थान पत्रिका द्वारा वर्ष 2000 में सर्वश्रेष्ठ कथा सम्मान।

संपर्क : बहादुर गढ़-124507 (हरियाणा)

मो. : 9813491654 इमेल : gyanpvivek@gmail.com

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-93-93091-96-3

₹ 160.00

चुने हुए शेर

ज्ञानप्रकाश विवेक

चुने हुए शेर

ज्ञानप्रकाश विवेक

सम्पादन

हरेराम समीप

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-93091-96-3
4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मो.: 9968288050, 9911866239
ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024
© ज्ञानप्रकाश विवेक

आवरण चित्र : ककसाड़ टीम
मुद्रक : श्री बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

समर्पण

ज़िन्दगी के रौशन चिराग़
गंगा शरण सिंह
के नाम...

अवाम के दुःख दर्द में शामिल सच्चे अशआर

–हरेराम समीप

भारतीय साहित्य में ग़ज़ल, सदियों से एक लोकप्रिय काव्य-विधा है। इसका प्रसार अनेक भारतीय भाषाओं में हो रहा है। आज हिंदी ग़ज़ल सर्वाधिक प्रचलित विधा है। आधुनिक साहित्य में हिंदी ग़ज़ल अपने समय की बेचैनी को मुखरित कर रही है। ग़ज़ल की बेचैनी का यह स्वर दुखी मनुष्य के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए उसके दुःख के कारकों और कारणों की भी तलाश कर रहा है और उसकी मुक्ति में सतत संघर्षरत है। हिंदी ग़ज़ल की यह जनपक्षधर परम्परा निराला, शमशेर, दुष्यंत और अदम गौंडवी से होते हुए ज्ञानप्रकाश विवेक तक आती है।

विवेक एक प्रतिभासंपन्न, प्रतिष्ठित और बहुआयामी साहित्यकार हैं। उन्होंने बेशुमार ग़ज़लें, कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं तथा ग़ज़ल-आलोचना के महत्वपूर्ण ग्रंथों की भी रचना की है। ग़ज़ल के प्रति उनके अनूठे समर्पण ने अब तक दस महत्वपूर्ण ग़ज़ल संग्रह सृजित किये हैं–'धूप के हस्ताक्षर', 'आँखों में आसमान', 'इस मुश्किल वक़्त में', 'गुफ़्तगू अवाम से है', 'घाट हजारों इस दरिया के', 'दरवाजे पर दस्तक' और 'लफ़्जों का घर' आदि संग्रह पाठकों के बीच समादृत और चर्चित हुए हैं। विवेक ने यकीनन ग़ज़ल की कहन और कथन में एक नया और अलग अंदाज निर्मित किया है। उनके इस 'अलगपन' को समझने के ध्येय से हमने उनके सभी ग़ज़ल-संग्रहों से चुनकर उत्कृष्ट 500 शेरों का एक संग्रह प्रस्तुत करने का विचार बनाया है ताकि ग़ज़ल के आम पाठक और अध्येता उनकी ग़ज़लगोई के और करीब आ सकें।

विवेक अपनी ग़ज़ल को 'ज़िन्दगी का आइना' और 'आदमी की शख्सियत का अक्स' मानते हैं। उन्होंने इन अक्सों को सायास नहीं गढ़ा, बल्कि ये उनकी गहरी संवेदना की उपज हैं। वे स्वयं लिखते हैं, "जो मैं कहता हूँ, वह मैं कहाँ